सत्यापित शीर्षक क्रमांक
MAH/HIN/50786/13/1/2013 T.C.

सृष्टी एग्रो

पाक्षिक

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक

वर्ष- 1 | अंक-4 | मुम्बई, 16 मार्च से 31 मार्च 2013 | पृष्ठ-8 | मूल्य-2/- रुपये

उत्पादन में वृद्धि के लिए कृषक नवीन कृषि तकनीक अपनायें : नन्दवाना

कोटा । कृषि औद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा) कोटा द्वारा प्रायोजित कृषि विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय जिला स्तरीय किसान मेला एवं प्रदर्शनी कार्यक्रम का आयोजन महाराव उम्मेदसिंह स्टेडियम पर हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला प्रमुख विद्या शंकर नन्दवाना थे। अध्यक्षता जिला कलक्टर राकेश जायसवाल ने की।

उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए जिला प्रमुख ने कहा कि कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए कृषकों को नवीन कृषि तकनीकी को अपनाना चाहिये। कृषकों द्वारा कृषि वैज्ञानिकों की सोच अनुसंधान एवं परामर्श को मध्यनजर कार्य करने पर पैदावार एवं आय में वृद्धि की जा सकेगी। उन्होंने कहा कि जिले के टेल क्षेत्रा के कृषकों की समस्या को ध्यान में रखते हुए नहरी तंत्र को सुधारने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष जिला कलक्टर राकेश जायसवाल ने कहा कि कृषि अनुसंधानों के परिलाभों को आई.ई.सी. के माध्यम से कृषकों तक पहुंचाया जावे। उन्होंने कहा कि कृषकों को सिंचाई कार्य में पानी का कुशलतम उपयोग करना चाहिये। उन्होंने बताया कि जिले में इस वर्ष समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीद एवं भण्डारण की पुख्ता व्यवस्थाएं रहेंगी। खरीद केन्द्रों की संख्या में गत वर्ष की तुलना में वृद्धि की गई है।

इस वर्ष अलग नये क्रय केन्द्रों की अनुमति राज्य सरकार से प्राप्त कर ली गई है जिन्हें मिलाकर इस वर्ष लद्यु केन्द्रों पर गेहूं की खरीद की जायेगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्रय केन्द्र तथा भण्डारण स्थल के लिए समन्वय समितियां गठित की गई हैं। सुल्तानपुर, सांगोद तथा इटावा क्रय विक्रय सहकारी समिति के माध्यम से क्रय केन्द्र संचालित किये जायें।

उद्घान समारोह में संयुक्त निदेशक कृषि (विस्तार) ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में परियोजना निदेशक (आत्मा) ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर जिला प्रमुख एवं जिला कलक्टर ने फल, सब्जी एवं फूल प्रतियोगिताओं में विजेता रहे कृषक प्रतियोगियों को पुरस्कृत भी किया। कार्यक्रम स्थल पर कृषि आदानों, उपकरणों तथा उत्पादों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। जिनमें चम्बल फॉर्टिलाइजर्स, श्रीराम फॉर्टिलाइजर्स, इफको, टाटा कैमिकल, प्रमुख थी। कार्यक्रम में डॉ. कुलवल द्वारा साईन इंण्डिया फाउंडेशन की ओर से स्टॉल लगाकर नेत्रदान के लिए आव्हान किया गया।

मंत्रिपरिषद् ने किसानों के हित में अनेक निर्णय लिए

भोपाल। मध्यप्रदेश के मंत्रिपरिषद् ने प्रदेश के किसानों को राहत देते हुए स्थायी कृषि पंप उपभोक्ताओं पर लगने वाले सरचार्ज को इसी वर्ष माफ करने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में संपन्न मंत्रिपरिषद् की

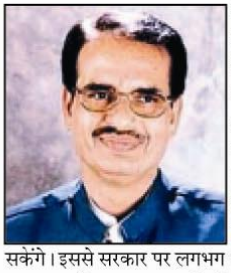

बैठक में यह भी तय किया गया कि बिजली बिल की मूल राशि का आधा हिस्सा सरकार भरेगी और शेष हिस्सा किसान दस किश्तों में भर सकेंगे। इससे सरकार पर लगभग 1100 करोड रुपए का भार पड़ेगा। एक अन्य निर्णय के अनुरूप अब किसानों को छह सौ रुपए प्रति हॉस पॉवर वर्ष में दो बार प्रति छह माह में जमा करने होंगे। वित्त वर्ष 2013-14 में अन्य सभी उपभोक्ताओं को राज्य सरकार की ओर से देय सब्सिडी की दरें वित्त वर्ष 2012-13 के अनुसार ही रहेंगी। वर्ष 2013-14 के लिए कृषि उपभोक्ताओं के लिए फ्यूल कॉस्ट एडजस्टमेंट का भार राज्य सरकार की ओर से ही वहन किया जाएगा।

मध्यप्रदेश में लहसुन प्याज और आलू के उत्पादन में वृद्धि

भोपाल। मध्यप्रदेश में आलू, प्याज और लहसुन का उत्पादन बढ़ाने के लगातार प्रयासों से इनके उत्पादन में जबरदस्त बढोत्तरी हुई है। कृषि विभाग के सूत्रों के अनुसार फिलहाल प्रदेश में आलू का उत्पादन 88 हजार हेक्टेयर में होता है और इसका उत्पादन लगभग 18 लाख 17 हजार टन से अधिक है।

इंदौर तथा इसके आसपास के क्षेत्रों के अलावा छिंदवाडा, उज्जैन, शाजापुर, देवास, मुरैना, सतना, राजगढ, जबलपुर, साबर, पन्ना, विदिशा, रतलाम और बैतूल जिले प्रकार लगभग 5400 हेक्टेयर में से अधिक होता है। लहसुन के नीमच, रतलाम, देवास, इंदौर, धार की खेती 11 हजार से अधिक हेक्टेयर लाख टन से अधिक है।

दमोह, टीकमगढ, छतरपुर, में आलू का उत्पादन होता है। इसी लहसुन का उत्पादन 57 हजार टन उत्पादन में उज्जैन, मंदसौर, और बडवानी जिले आगे हैं। प्याज में होती है और इसका उत्पादन 17

प्याज की फसल इंदौर, खंडवा, बडवानी उज्जैलन, मंदसौर, रतलाम, शाजापुर, रीवा, सतना, विदिशा, राजगढ, जबलपुर, सागर और पन्ना में प्रमुख रूप से ली जाती है। इन तीन महत्वपूर्ण नगद फसलों के उत्पादन में तेजी लाने के लिए लागातार प्रयास किए जाते रहे हैं। इंदौर में नौ मार्च को एक राष्ट्र-स्तरीय संगोष्ठी में इन फसलों का उत्पादन बढाने के साथ-साथ इनके भंडारण तथा बाजार के विषय में विशेषज्ञ चर्चा करेंगे। इसमें प्रदेश के सभी जिलों से किसानों को बुलाया गया है। साथ ही दूसरे प्रदेशों के सफल उद्यानिकी किसानों को अपने अनुभव मध्यप्रदेश के किसानों के साथ बांटने के लिए आमंत्रित किया है। सूत्रों के अनुसार पिछले पांच वर्ष में राज्य सरकार ने भंडारण और प्र-संस्करण को बढावा देने के लिए नवीन कोल्ड स्टोरेज स्थापित करवाये हैं। इसके फलस्वरुप आज प्रदेश में 8 लाख 60 हजार टन भंडारण की व्यवस्था उपलब्ध है। इसे और बढाने के लिए खाद्य प्र-संस्करण नीति को और व्यावहारिक बनाया गया है। उन्होंने बताया कि हॉर्टीकल्चर (उद्यानिकी) विभाग द्वारा लहसुन की खेती पर किसान को दो हेक्टेयर तक अधिकतम 12 हजार 500 रुपए का अनुदान दिया जाता है। यंत्रों पर 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। राज्य शासन द्वारा उद्यानिकी फसलों की संरक्षित खेती, माइक्रो इरीगेशन, उन्नत प्रौद्योगिकी, जैविक प्रबंधन तथा फसलों पर प्रबंधन के लिए भी अनुदान दिया जा रहा है।

महाराष्ट्र समेत सात राज्यों को 2,892 करोड़ का राहत पैकेज

नई दिल्ली। केंद्र ने महाराष्ट्र समेत सात राज्यों को सूखा, बाढ़ और भूस्खलन के प्रभाव से निपटने के लिए 2,892 करोड़ रुपए से अधिक की राहत सहायता जारी करने का निर्णय किया है। कृषि मंत्री शरद पवार की अध्यक्षता में सूखे पर मंत्रियों के अधिकार प्राप्त समूह (ईजीओएम) को यहां हुई बैठक में इस पैकेज को मंजूरी दी गई। पवार ने बाद में पत्रकारों से कहा, '2012 में सूखा, बाढ़ और भूस्खलन की स्थिति से निपटने के लिए कई राज्यों से केंद्रीय सहायता की मांग आई थी। हमने राहत पैकेज मंजूर कर लिया है। यह हाल के वर्षों में मंजूर सबसे बड़ा राहत पैकेज है।'

महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, गुजरात, केरल और उत्तराखंड के लिए कुल 2,892.61 करोड़ रुपये का राहत पैकेज देने का निर्णय किया गया है। इसमें महाराष्ट्र में पशु शिविरों के लिए आवंटित धन शामिल नहीं है। पवार ने कहा कि सूखे की स्थिति से निपटने के लिए महाराष्ट्र को 1,207.84 करोड़ रुपए, गुजरात को 864.71 करोड़ रुपए और केरल को 66.61 करोड़ रुपए दिए जा रहे हैं। मंत्रिसमूह ने केरल के कुछ इलाकों में बाढ़ के चलते पैदा हुई स्थिति से निपटने के लिए भी 54.49 करोड़ रुपये की राहत सहायता देने का प्रस्ताव मंजूर किया है। नीलम चक्रवात के चलते आंध्र प्रदेश में हुई तबाही से उबरने के लिए राज्य सरकार को 417.12 करोड़ रुपए की राहत उपलब्ध कराने का निर्णय किया गया है।

वहीं, हिमाचल प्रदेश के लिए 115.32 करोड़ रुपए, सिक्किम के लिए 93.76 करोड़ रुपए और उत्तराखंड के लिए 72.76 करोड़ रुपए का पैकेज मंजूर किया गया है। इन पहाड़ी राज्यों में लोगों को बादल फटने, बाढ़ और भूस्खलन की घटनाओं का सामना करना पड़ा था।

शरद पंवार ने कहा कि राष्ट्रीय आपदा राहत कोष के तहत जारी यह राहत पैकेज एक मार्च, 2013 से प्रभावी है। महाराष्ट्र में 40 साल का सबसे गंभीर सूखा पड़ा है। पवार ने कहा कि मंत्रिसमूह ने स्थिति से पार पाने में किसानों की मदद करने के लिए अतिरिक्त उपाय किए हैं। यह राज्य के लिए मंजूर 1,207.84 करोड़ रुपये के राहत पैकेज के अतिरिक्त होगा।

होलिका दहन, कब और कैसे करें, पूजन विधि

26 मार्च 2013 मंगलवार,को होलिका दहन किया जायेगा। प्रदोष व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भ्रद्रारहित काल में होलिका दहन किया जाता हैं। 26 मार्च, 2013 को गोधूलि बेला में होलिका-दहन किया जा सकता है। इसलिए होलिका-दहन से पूर्व और भद्रा समय के पश्चात् होली का पूजन किया जाना चाहिए।

-गोविन्द देव (गुरूजी)

भद्रा के मुख का त्याग करके निशा मुख में होली का पूजन करना शुभफलदायक सिद्ध होता है,ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भी पर्व-त्योहारों को मुहूर्त शुद्धि के अनुसार मनाना शुभ एवं कल्याणकारी है। हिंदू धर्म में अनगिनत मान्यताएं, परंपराएं एवं रीतियां हैं। वैसे तो समय परिवर्तन के साथ-साथ लोगों के विचार व धारणाएं बदलीं, उनके सोचने-समझने का तरीका बदला, परंतु संस्कृति का आधार अपनी जगह आज भी कायम है।

आज की युवा पीढ़ी में हमारी प्राचीन नीतियों को लेकर कई सवाल उठते हैं, परंतु भारतीय धर्म साधना के परिवेश में वर्ष भर में शायद ही ऐसा कोई त्योहार हो जिसे हमारे राज्य अपने-अपने रीति रिवाजों के अनुसार धूमधाम से न मनाते हो।

होलिका में आहुति देने वाली सामग्रियां

होलिका दहन होने के बाद होलिका में जिन वस्तुओं की आहुति दी जाती है, उसमें कच्चे आम, नारियल, भुट्टे या सप्तधान्य, चीनी के बने खिलौने, नई फसल का कुछ भाग है। सप्त धान्य है, गेंहूं, उडद, मूंग, चना, जौ, चावल और मसूर।

होलिका दहन की पूजा विधि

होलिका दहन करने से पहले होली की पूजा की जाती है। इस पूजा को करते समय, पूजा करने वाले व्यक्ति को होलिका के पास जाकर पूर्व या उतर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए। पूजा करने के लिये निम्न सामग्री को प्रयोग करना चाहिए।

1. एक लोटा जल, माला, रोली, चावल, गंध, पुष्प, कच्चा सूत, गुड, साबुत हल्दी, मूंग, बताशे, गुलाल, नारियल आदि का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नई फसल के धान्यों जैसे- पके चने की बालियां व गेंहूं की बालियां भी सामग्री के रुप में रखी जाती है।
2. इसके बाद होलिका के पास गोबर से बनी ढाल तथा अन्य खिलौने रख दिये जाते है।
3. होलिका दहन मुहुर्त समय में जल, मोली, फूल, गुलाल तथा गुड आदि से होलिका का पूजन करना चाहिए। गोबर से बनाई गई ढाल व खिलौनों की चार मालाएं अलग से घर लाकर सुरक्षित रख ली जाती है। इसमें से एक माला पितरों के नाम की, दूसरी हनुमान जी के नाम की, तीसरी शीतला माता के नाम की तथा चौथी अपने घर- परिवार के नाम की होती है।
4. कच्चे सूत को होलिका के चारों और तीन या सात परिक्रमा करते हुए लपेटना होता है। फिर लोटे का शुद्ध जल व अन्य पूजन की सभी वस्तुओं को एक-एक करके होलिका को समर्पित किया जाता है। रोली, अक्षत व पुष्प को भी पूजन में प्रयोग किया जाता है। गंध-पुष्प का प्रयोग करते हुए पंचोपचार विधि से होलिका का पूजन किया जाता है। पूजन के बाद जल से अर्ध्य दिया जाता है।
5. सूर्यास्त के बाद प्रदोष काल में होलिका में अग्नि प्रज्जवलित कर दी जाती है। इसमें अग्नि प्रज्जवलित होते ही डंडे को बाहर निकाल लिया जाता है। सार्वजनिक होली से अग्नि लाकर घर में बनाई गई होली में अग्नि प्रज्जवलित की जाती है। अंत में सभी पुरुष रोली का टीका लगाते है, तथा महिलाएं गीत गाती है। तथा बडों का आशिर्वाद लिया जाता है।
6. सेंक कर लाये गये धान्यों को खाने से निरोगी रहने की मान्यता है।
7. ऐसा माना जाता है कि होली की बची हुई अग्नि और राख को अगले दिन प्रात: घर में लाने से घर को अशुभ शक्तियों से बचाने में सहयोग मिलता है तथा इस राख का शरीर पर लेपन भी किया जाता है।

राख का लेपन करते समय निम्न मंत्र का जाप करना कल्याणकारी रहता है:-

वंदितासि सुरेन्द्रेण ब्रम्हणा शंकरेण च ।
अतस्त्वं पाहि माँ देवी ! भूति भूतिप्रदा भव ॥

होलिका पूजन के समय निम्न मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

अहकूटा भयत्रस्तै: कृता त्वं होलि बालिशै:
अतस्वां पूजयिष्यामि भूति-भूति प्रदायिनीम

इस मंत्र का उच्चारण एक माला, तीन माला या फिर पांच माला विषम संख्या के रुप में करना चाहिए।

होलिका पूजन के बाद होलिका दहन

विधिवत रुप से होलिका का पूजन करने के बाद होलिका का दहन किया जाता है। होलिका दहन सदैव भद्रा समय के बाद ही किया जाता है। इसलिये दहन करने से भद्रा का विचार कर लेना चाहिए। ?सा माना जाता है कि भद्रा समय में होलिका का दहन करने से क्षेत्र विशेष में अशुभ घटनाएं होने की सम्भावना बढ जाती है।

इसके अलावा चतुर्दशी तिथि, प्रतिपदा में भी होलिका का दहन नहीं किया जाता है। तथा सूर्यास्त से पहले कभी भी होलिका दहन नहीं करना चाहिए। होलिका दहन करने समय मुहूर्त आदि का ध्यान रखना शुभ माना जाता है।

आधुनिक परिपक्ष्य में होलिका दहन

आज के संदर्भ में वृक्षारोपण के महत्व को देखते हुए, आज होलिका में लकडियों को जलाने के स्थान पर, अपने मन से आपसी कटुता को जलाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे हम सब देश की उन्नति और विकास के लिये एक जुट होकर कार्य कर सकें। आज के समय की यह मांग है कि पेड जलाने के स्थान पर उन्हें प्रतिकात्मक रुप में जलाया जायें। इससे वायु प्रदूषण और वृक्षों की कमी से जूझती इस धरा को बचाया जा सकता है। प्रकृति को बचाये रखने से ही मनुष्य जाति को बचाया जा सकता है, यह बात हम सभी को कभी नहीं भूलनी चाहिए।

सम्पादकीय

हिमाचल को बजट

बजट विधानसभा में पेश कर दिया गया और इस पर वैसी ही प्रतिक्रियाएं भी आरंभ हो गई हैं। क्या खोया, क्या पाया के आधार पर बजट को कसौटी पर उतारने के अलावा दलीय आधार पर भी प्रतिक्रियाएं आ रही हैं जो स्वाभाविक हैं। वित्तीय रूप से कमजोर और केंद्रीय एवं दीगर मदद के सहारे चलने वाले प्रदेश में ऐसा ही बजट अपेक्षित भी था। न महंगे और सस्ते की फेहरिस्त लंबी है और न लोकलुभावन वादों के अंबार। यह और बात है कि कुछ घोषणाएं सीधे जनता को संबोधित करने का प्रयास करेंगी। बेरोजगारी को लेकर मुख्यमंत्री का यह कहना तर्कसंगत है कि यदि इसका स्थायी हल निकालना है तो कौशल पर बल देना होगा लेकिन उसके लिए यह जरूरी है कि अधिकारी वर्ग बेरोजगारों के कौशल को निखारने में संजीदगी से काम करे। बजट आर्थिक मोर्चे पर क्या कह सका है यह अब सर्वविदित है लेकिन मुख्यमंत्री का बजट भाषण में यह स्वीकार करना कुछ संकेत देता है कि कुछ जटिल प्रक्रियाओं एवं लालफीताशाही के कारण जनता को समय पर सरकारी सेवाएं नहीं मिल पाती हैं। मुख्यमंत्री का लोक सेवा गारंटी अधिनियम पर जोर है इसलिए यह उम्मीद भी की जा सकती है कि हिमाचल प्रदेश की चिह्नित विद्युत क्षमता के दोहन में भी लालफीताशाही आड़े नहीं आएगी और प्रदेश में खुलने वाले छह और बंदर नसबंदी केंद्र भी महज दिखावे के केंद्र बन कर नहीं रह जाएंगे वह भी तब, जब प्रदेश में बीते दस वर्षों से बंदरों की गणना ही नहीं हुई है। पंचायतों को भी कसा जाएगा। बीडीओ और तहसीलदार को 350 का मोबाइल फोन खर्च लोक सेवा की गारंटी को कितना बढ़ाएगा, यह देखना होगा। बागवानी आदि पर भी कुछ पैसे समर्थन मूल्य बढ़ाए जाने से बागवान कितने खुशहाल होंगे, यह भी भविष्य के गर्भ में है। वस्तुत: ये छोटी-छोटी राहतें हिमाचल प्रदेश में इसलिए छोटी हैं क्योंकि इनके पीछे उधार का साया है। अपने संसाधनों के समुचित दोहन के प्रति गंभीरता बीते कुछ वर्षों से देखने में नहीं आ रही है। होना यह चाहिए कि आने वाले बजट अपने साथ इस सवाल का जवाब भी लाएंगे हिमाचल प्रदेश के फल राज्य, ऊर्जा राज्य, प्राकृतिक सौंदर्य से भरा राज्य होने के बावजूद इसका सिर, पैर को ढांपते हुए और पैर, सिर को ढांपते हुए बिना चादर क्यों रह जाते हैं। उधार कभी बरकत के लिए आश्वस्त नहीं करता इसलिए आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना होगा।

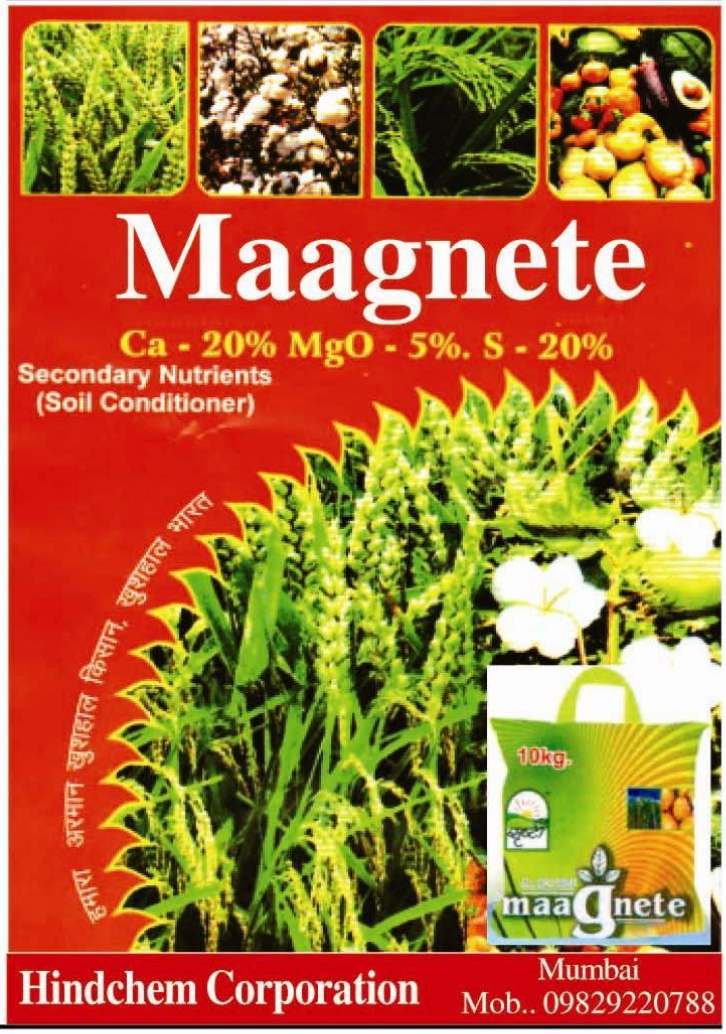

राष्ट्रीय डेयरी मेला राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान- एक समीक्षा

समय के इस बदलते परिवेष में जबकि हमारे पास इलैक्ट्रानिक मीडिया, मोबाईल टेलीफोन तथा अन्य प्रचार-प्रसार के साधन उपलब्ध हैं फिर भी कृशि पषुपालन एवं अन्य क्षेत्रों में मेलों का अपना ही महत्व है क्योंकि ऐसे अवसर पर हम एक ही जगह ज्ञान-विज्ञान और कौषलता को प्राप्त करते है। भारत वर्श के विभिन्न प्रदेषों में समय-समय पर कृशि पषुपालन एवं अन्य क्षेत्रों में विकसित की गई नवीनतम तकनीकों के प्रचार-प्रसार हेतु मेलों आयोजित किए जाते हैं जिनका अपना ही महत्व है जिसमें किसान तथा वैज्ञानिक बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

इसी संदर्भ में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय डेयरी मेला 25-27 फरवरी 2013 को आयोजित किया गया जिसमें हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेष, राजस्थान, छतीसगढ़, उत्तर प्रदेष, बुन्देलखंड तथा बिहार तथा अन्य राज्यों के 12,000 से भी अधिक किसानों, पषुपालकों, ग्रामीण महिलाओं, युवकों एवं युवतियों ने भाग लिया।

इस मेले में 80 से भी अधिक भारतीय कृशि अनुसंधान परिशद के विभिन्न संस्थानों तथा निजि कम्पनियों ने अपनी-अपनी नवीनतम तकनीकों, उत्पादों, मशीनों को जोकि दुग्ध उत्पाद, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, पशु स्वास्थय और कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादों के रख-रखाव से संबंधित हैं, को दर्शाया। इस मेले का मुख्य उद्देश्य देश के विभिन्न प्रदेशों के किसानों एवं डेयरी उद्यमियों को नवीनतम तकनीकयों से अवगत कराना रहा।

मेले के मुख्य आकर्शण में उत्कृष्ट दुधारू गायों एवं भैंसों की विभिन्न श्रेणियों में आयोजित प्रतियोगिताएं रही और ये प्रतियोगिताएं विभिन्न वर्ग के दुधारू पशुओं में दूध उत्पादकता एवं सौन्दर्य से संबंधित थी। प्रतियोगिताएं होने वाले रिंग के बाहर हजारो की संख्या में उमड़ी भीड़ साफ दर्षा रही थी कि इस मेले में 233 पषुपालकों द्वारा लाए गए 504 विभिन्न श्रेश्ठ पषुओं में कौन प्रथम होगा और कौन तृत्य ।

तीन दिवसीय इस राष्ट्रीय डेयरी मेले का विधिवत् उदघाटन डा. आर.एस. परोदा, अध्यक्ष, हरियाणा किसान आयोग ने 25 फरवरी 2013 को किया

मेले मे उपस्थित किसानों, पषुपालकों, ग्रामीण महिलाओं को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि खेती और पषुपालन परम्परागत तरीके से ना करके आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर करें जिसके चलते किसान परिवारों को अधिक उत्पादन होने पर आर्थिक लाभ हो। उन्होने इस सन्दर्भ में कहा कि किसान परिवार निरन्तर वैज्ञानिकों और प्रसार अधिकारियों को मिलते रहें ।

डा. परोदा ने कहा कि कुछ एषियन देष भारत वर्श से निरन्तर मुर्राह नस्ल की भैसों की मांग कर रहे हैं। अत: मुर्राह के संर्वधन और नस्ल सुधार की ओर पषुपालकों को और ध्यान देना होगा । उन्होने इस बात पर भी बल दिया कि ग्रामीण स्तर पर कृशक परिवार स्वयं सहायता समूहों के द्वारा विभिन्न उत्पादों को तैयार कर उनका स्वयं विपणन करें ।

डा. परौदा ने इस बात पर भी बल दिया कि ग्रामीण स्तर पर यह देखा गया है कि उच्च गुणवत्ता वाली पषुपोशण की ओर ग्रामीण परिवार ध्यान नही देतें और इस सन्दर्भ में उचित खिलाई पिलाई करने पर वह दूधारू पषुओं से ज्यादा दूध प्राप्त कर आर्थिक लाभ कमायें ।

डा. परौदा ने कहा कि वातावरण का प्रभाव भारत जैसे देष में दुधारू पशुओं पर विशेषत: रहता है जिसके चलते पशुपालकों को विषेष रूप से गर्मियों में जब पशु कम हरा चारा खाते हैं और उनमें दूध उत्पादकता घटने की आषंका भी रहती है, उस समय उनका विषेष ध्यान देना चाहिए। इसी प्रकार ज्यादा ठंड वाले समय में भी पशु अच्छी खुराक चाहता है ताकि उनका उचित दूध बना रहे। पशुओं के मौसम के अनुसार उचित रख-रखाव हेतु यह अनिवार्य है कि उनके रहने का स्थान मौसम के अनुकूल होना चाहिए, जिसके चलते उन्हें अच्छे शैड बनाने की आवष्यकता है जो सुगमता से उपलब्ध स्थानीय वस्तुओं के प्रयोग से ही बनाये जाएं।

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान के निदेषक डा. अनिल कुमार श्रीवास्तव ने पषुपालन के विभिन्न आयामों पर चर्चा करते हुए बल दिया कि पषुपालक परिवार पषुओं में थनैला तथा मुंह खुर की बिमारी की रोकथाम हेतु समय रहते करें ताकि उनके पषुओं से उनको अधिक दूध प्राप्त होता रहे । डेयरी प्रोद्योगिकी के विशय में उन्होने कहा कि संस्थान षीघ्र ही भैंस के दूध से मौजरेला चीज की तकनीक को डेयरी उद्यमियों तथा डेयरी उद्योग जगत से सांझा करेगा। 26 फरवरी को किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें वैज्ञानिकों एवं विषेशज्ञों ने पषुपालन, कृशि एवं संबंधित विशयों पर अपने विचार रखे तथा कार्यक्रम में उपस्थित किसानों, पषुपालकों, ग्रामीण महिलाओं ने पषुपालन के विभिन्न क्षेत्रों में कई प्रकार के प्रन रखे तथा वैज्ञानिकों से उनके उत्तर लिए। तीन दिवसीय राष्ट्रीय डेयरी मेले के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि श्री अरविंद कौशल, अतिरिक्त सचिव, (डेयर) तथा सचिव भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने आए हुए विभिन्न राज्यों के किसानों, पषुपालकों, ग्रामीण महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारतवर्श में दुधारू पषुओं से अधिक दूध उत्पादकता लेने के लिये अत्याधिक आवष्यक है कि उनका पोशण वैज्ञानिक पद्धति से हो और उन्हें पूरा साल हरा चारा उपलब्ध रहे।

डॉ. दलीप कुमार गोसांई, प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

PAWAN SONI
C.A
ADD: KOLIAWALE 504,OM VIRAJ, V.P.ROAD,
PALIRAM ROAD,ANDHERI(WEST),
MUMBAI-400058.
MOB:09820521321

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

चौधरी कृषि सेवा केन्द्र
बाईपास बण्डवा रोड, राजलदेसर (चूरू),
प्रो. बीरबलराम अणदा, मो. 9414865121

अधिकृत विक्रेता

- एरीज एग्रोवेट प्रा.लि.
- रेलीज इण्डिया लि.
- धानुका एग्रोटेक प्रा.लि.
- क्रीस्टल फास्फेट प्रोटेक्शन लि.
- एक्सल क्रोपकेयर लि.
- बायोस्टड इण्डिया लि.
- गोदरेज एग्रोटेक लि.
- बायर
- पीएसआई सीड्स
- धान्या सीड्स
- निर्मल सीड्स
- हिन्दकेम कॉरपोरेशन
- नाथ सीड्स प्रा. लि.
- भारत इनसेकीसाइटडस ली.
- पंजाब केमिकल्स एण्ड क्रोप प्रोटेक्शन

संबंधित फर्म

चौधरी खाद बीज भण्डार
ढढेरू (राजलदेसर) चूरू
प्रो. खीराजराम अणदा
मो. 9414401896

न्यू चौधरी खाद भण्डार
खेतान कुई के पास उतरादा बाजार, रतनगढ़,
प्रो. सुखराम अणदा
मो. 9414590057

बटन मशरूम उगाने के लिए कम्पोस्ट खाद बनाने की तकनीक

बटन मशरूम की खेती एक विशेष विधि से तैयार की गई कम्पोपस्टज खाद पर की जाती है। इस कम्पोबस्ट को साधारण अथवा निर्जीवीकरण विधियों से बनाया जाता है।

साधारण विधि से कम्पोस्ट बनाने की तकनीक

साधारण विधि से कम्पोस्ट बनाने में 20 से 25 दिन का समय लगता है:-

100 सेंमी लम्बीतए 50 सेंमी चौडी तथा 15 सेंमी ऊची 15 पेटियों के लिए इस विधि से कम्पेतस्टम बनाने के लिए सामग्रीरू

1. धान या गेहूं का 10.12 सेंमी लम्बा ई में कटा हुआ भूसा . 250 किलोग्राम
2. धान या गेहूं की भूसी . 20.25 किलोग्राम
3. अमोनियम सल्फेट या कैल्शियम अमोनियम नाईट्रेट . 4 किलोग्राम
4. यूरिया . 3 किलोग्राम
5. जिप्साम . 20 किलोग्राम
6. मैलाथियॉन . 10 किलोग्राम

जिस स्थानन पर कम्पो2स्ट् तैयार करनी हो वहां पर गेहूं के भूसे की 8 से 10 इंच मोटी तह बिछाकर उसे पानी से अच्छीथ तरह से भिगो दें। पानी में भीगोने के लगभग 16 से 18 घंटे बाद उसमें जिप्सपम तथा कीटनाशक को छोडकर बाकी सभी सामग्री अच्छी तरह से मिला दें।

फिर उस सारी सामग्री का एक मीटर चौडाए एक मीटर ऊचा तथा समायोजित लम्बागई का ढेर बना दें।

इस ढेर को प्रत्येक 3.4 दिन के अन्ताराल पर हवा लगाने के लिए फर्श पर खोलकर बिछा दें तथा आधा घंटे बाद दोबारा उसी आकार का ढेर बना दें। अगर भूसा सूखा लगे तो उस पर हल्काक पानी छिडककर गीला कर लें।

तीसरी पलटाई के दौरान कुल जिप्साम की आधी मात्रा मिला दें। शेष बचे जिप्सलम को चौथी पलटाई के दौरान भूसे में मिला दें।

पॉचवी पलटाई के दौरान 10 मिलि लिटर मैलाथियान को 5 लीटर पानी में घोलकर भूसे पर छिडकाव करें तथा अच्छीद तरह से मिलाकर फिर से ढेर बना दें। अगले 3 से 4 दिनों में कम्पोवस्टच खाद पेटियों में भरने योग्यढ हो जायेगा

निर्जीविकरण विधि से कम्पोस्ट बनाने की तकनीक

मशरूम का उत्पोदन अच्छीप कम्पोटस्टन खाद पर निर्भर करता है अतरू कम्पो स्टो बनाते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए ।

निर्जीविकरण विधि से कम्पोस्ट खाद दो चरणों में लगभग 14.15 दिनों में तैयार होती है

पहला चरण

इस विधि से कम्पो स्टी बनाने का पहला चरण साधारण विधि के समान ही है परन्तूद इसमें पलटाई हर दूसरे दिन यानि लगभग 48 घंटे के बाद की जाती है तीसरी पलटाई में जिप्स्म मिला दिया जाता है ।8 दिन बाद कम्पोकस्टत दूसरे चरण के लिए तैयार हो जाती है ।

दूसरा चरण

दूसरे चरण में कम्पोगस्टा को सीधे ही या फिर पेटीयों में भरकर भाप द्वारा पहले से 45 डिग्री ताप पर गर्म किये हुए निर्जीविकरण कक्ष में रखते हैं।

इसके बाद इस कक्ष की सभी खिडकीयाँ दरवाजें बंद कर दें तथा अगले 2.3 दिनों तक भाप से अन्द र का तापमान 57.58 डिग्री पर बनाएं रखें ।

तीसरे दिन 2 घंटे के लिए इस कक्ष का ताप 60 से 62 डिग्री पर स्थिर करें तत्पंश्चापत कक्ष में ताजी हवा का प्रवाह बनाऐं तथा तापमान को धीरे.धीरे गिरकर 45 डिग्री तक आने दें ।

अगले 3.4 दिनों तक कम्पोस्टी को सामान्य ताप तक ठंडा होने दें । सामान्य ताप पर आने पर कम्पोहस्टह भरनें के लिए तैयार हो जाती है । तैयार कम्पो1स्टठ गहरे भूरे रंग की तथा गंध रहीत होती है तथा इसका लगभग उदासीन होता है ।

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

KHANDELWAL AGENCIES

OLD SUBJI MANDI, AJMERI GATE, JAIPUR 302 001 (RAJ)
Tel.: 0141-2367582, 2371974, Mob.: 09828289189, 09828346899
E-mail: raju28375@gmail.com

Distributors

VIBHAAGROTECH LTD.	US AGRI SEEDS
J.U. PEST. & CHEM.P. LTD.	DIVERSEY INDIA P. LTD.
BHARAT INSECTICIDES LTD.	MAKHTESHIM AGAN INDIA P. LTD.
NAGARJUNA AGRICHEM LTD.	SWAL CORPORTION LTD.
KEERTI FERTILIZERS & CHEMICALS	NAGARJUNA FERT. & CHEM.LTD
HINDCHEM CORPORATION	CHEMET WETS & FLOW LTD.

होली एवं खाटूश्याम मेले की हार्दिक शुभकामनाएं

Shri Balaji Enterprises

c-21, krishi upaj Mandi, Sikar (Raj.) Mo. 9414351659

खाद, बीज व कीटनाशक दवाईयों के थोक व खुदरा विक्रेता

अधिकृत विक्रेता

श्री बालाजी एग्रो इन्डस्ट्रीज
चम्बइल फर्टिलाईजर एण्ड केमिकल्स लिमिटेड
कीर्ति फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल्स
हिन्दकेम कारपोरेशन
गुजरात स्टेट फर्टिलाईजर एण्ड केमिकल्स
राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाईजर लिमिटेड
गोल्डन सीड्स
सेन्चुरी सीड्स
पीएचआई सीड्स प्रा.लि.
सीड इनोवेशन
इण्डियन पोटाश लिमिटेड
विभा सीड्स

PIONEER. A DuPont Company
Sinnova
IPL

ग्वार, बाजरा व मूंगफली में खरपतवार (कचरा) नष्ट करने की दवाई उपलब्ध।
पशुओं को खिलाने की स्पशेल चूरी भी उपलब्ध है।
मूंगफली की अधिक पैदावार लेने के लिए: कैलरिव एवं सल्फीनो डालें।

हरी खाद, मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बढाने का सस्ता विकल्प

मिट्टी की उपजाऊ शक्ति को बनाये रखने के लिए हरी खाद एक सस्ता विकल्प है । सही समय पर फ्लीदार पौधे की खड़ी फसल को मिट्टी में ट्रेक्टर से हल चला कर दबा देने से जो खाद बनती है उसको हरी खाद कहते हैं ।

आदर्श हरी खाद में निम्नलिखित गुण होने चाहिए

- उगाने का न्यूनतम खर्च
- न्यूनतम सिंचाई आवश्यकता
- कम से कम पादम संरक्षण
- कम समय में अधिक मात्रा में हरी खाद प्रदान कर सकें
- विपरीत परिस्थितियों में भी उगने की क्षमता हो
- जो खरपतवारों को दबाते हुए जल्दी बढ़त प्राप्त करे
- जो उपलब्ध वातावरण का प्रयोग करते हुए अधिकतम उपज दे ।

हरी खाद बनाने के लिये अनुकूल फसले

- ढेंचाए लोबियाए उरदए मूंगए ग्वार बरसीमए कुछ मुख्य फसले है जिसका प्रयोग हरी खाद बनाने में होता है । ढेंचा इनमें से अधिक आकांक्षित है ।
- ढैंचा की मुख्य किस्में सस्बेनीया ऐजिप्टिकाए एस रोस्ट्रेटा तथा एस एक्रेलेटा अपने त्वरित खनिजकरण पैर्टनए उच्च नाइट्रोजन मात्रा तथा अल्प ब्रूछ अनुपात के कारण बाद में बोई गई मुख्य फसल की उत्पादकता पर उल्लेखनीय प्रभाव डालने में सक्षम है

हरी खाद के पौधो को मिट्टी में मिलाने की अवस्था

- हरी खाद के लिये बोई गई फसल 55 से 60 दिन बाद जोत कर मिट्टी में मिलाने के लिये तैयार हो जाती है ।
- इस अवस्था पर पौधे की लम्बाई व हरी शुष्क सामग्री अधिकतम होती है 55 स 60 दिन की फसल अवस्था पर तना नरम व नाजुक होता है जो आसानी से मिट्टी में कट कर मिल जाता है ।
- इस अवस्था में कार्बन.नाईट्रोजन अनुपात कम होता हैए पौधे रसीले व जैविक पदार्थ से भरे होते है इस अवस्था पर नाइट्रोजन की मात्रा की उपलब्धता बहुत अधिक होती है
- जैसे जैसे हरी खाद के लिये लगाई गई फसल की अवस्था बढ़ती है कार्बन.नाइट्रोजन अनुपात बढ़ जाता हैए जीवाणु हरी खाद के पौधो को गलाने सड़ाने के लिये मिट्टी की नाइट्रोजन इस्तेमाल करते हैं ।जिससे मिट्टी में अस्थाई रूप से नाइट्रोजन की कमी हो जाती है ।

हरी खाद बनाने की विधि

- अप्रैलण्मई माह में गेहूँ की कटाई के बाद जमीन की सिंचाई कर लें ।खेत में खड़े पानी में 50 कि0 ग्रा0 प्रति है0 की दर से ढेंचा का बीज छितरा लें
- जरूरत पड़ने पर 10 से 15 दिन में ढेंचा फसल की हल्की सिंचाई कर लें ।
- 20 दिन की अवस्था पर 25 कि0 प्रति ह0की दर से यूरिया को खेत में छितराने से नोडयूल बनने में सहायता मिलती है ।
- 55 से 60 दिन की अवस्था में हल चला कर हरी खाद को पुनरू खेत में मिला दिया जाता है ।इस तरह लगभग 10ण्15 टन प्रति है0 की दर से हरी खाद उपलब्ध हो जाती है ।
- जिससे लगभग 60ण्80 कि0ग्रा0 नाइट्रोजन प्रति

है0 प्राप्त होता है ।मिट्टी में ढेंचे के पौधो के गलने सड़ने से बैक्टीरिया द्वारा नियत सभी नाइट्रोजन जैविक रूप में लम्बे समय के लिए कार्बन के साथ मिट्टी को वापिस मिल जाते हैं ।

हरी खाद के लाभ

1. हरी खाद को मिट्टी में मिलाने से मिट्टी की भौतिक शारीरिक स्थिति में सुधार होता है ।
2. हरी खाद से मृदा उर्वरता की भरपाई होती है
3. न्यूट्रीयन् टअस की उपलब्धता को बढ़ाता है
4. सूक्ष्म जीवाणुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है
5. मिट्टी की संरचना में सुधार होने के कारण फसल की जड़ों का फैलाव अच्छा होता है ।
6. हरी खाद के लिए उपयोग किये गये फ्लीदार पौधे वातावरण से नाइट्रोजन व्यवस्थित करके नोडयूल्ज में जमा करते हैं जिससे भूमि की नाइट्रोजन शक्ति बढ़ती है ।
7. हरी खाद के लिये उपयोग किये गये पौधो को जब जमीन में हल चला कर दबाया जाता है तो उनके गलने सड़ने से नोडयूल्ज में जमा की गई नाइट्रोजन जैविक रूप में मिट्टी में वापिस आ कर उसकी उर्वरक शक्ति को बढ़ाती है ।
8. पौधो के मिट्टी में गलने सड़ने से मिट्टी की नमी को जल धारण की क्षमता में बढ़ोतरी होती है। हरी खाद के गलने सड़ने से कार्बनडाइआक्साइड गैस निकलती है जो कि मिट्टी से आवश्यक तत्व को मुक्त करवा कर मुख्य फसल के पौधो को आसानी से उपलब्ध करवाती है। हरी खाद के बिना बोई गई धान की फसल
9. हरी खाद दबाने के बाद बोई गई धान की फसल में ऐकिनोक्लोआ जातियों के खरपतवार न के बराबर होते है जो हरी खाद के ऐलेलोकेमिकल प्रभाव को दर्शाते है ।

डॉ. वेद प्रकाश, डॉ. बी.एन सिंह, डॉ. जीआर सिंह, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रैद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारंज फैजाबादँ

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री हनुमान एग्रो एजेन्सी

खाद, बीज व कीटनाशक दवाईयों के विक्रेता

अधिकृत विक्रेता

- सुमीटोमो केमिकल्स इण्डिया प्रो. लि.
- एग्रीमास केमिकल्स लि.
- ट्रोपीकल एग्रोसिस्टम (इण्डिया) प्रा. लि.
- हिन्दकैम कोरपोरेशन
- गुजरात कृषि रसायन प्रा. लि.

प्रो. हनुमानप्रसाद सारस्वत

दादा नापासर वाले

Mob. : 9461159281, 9799992651

17-बी, नई अनाज मण्डी बीकानेर (राज.)

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

वीर तेजाजी खाद बीज भण्डार

वार्ड नं. 4, विष्णु भगवान के मंदिर के पास लाछडसर, रतनगढ़ (चूरू)

Deals in

Agriculture Equipments, Stranglers, Khad, Beej, Uria, Panwara Sets, Electric Motors, Supply Work, Pestisides, Electronic Goods, Pipe, Wire, Reappearing Work

नेमी चन्द्र बिस्सू

मो. 9929474632

ईश्वर राम बिस्सू

मो. 9929292932

संबंधित फर्म

बिस्सू घिंटाला ब्रादर्श

(अनाज के आडतिये)

21 नई अनाज मण्डी, लूणकरणसर, मो.9929292932

जिला स्तरीय किसान मेला सम्पन्न

टोडाभीम। गांव बालघाट में पुलिस थाने के सामने शनिवार को जिला स्तरीय किसान मेले का आयोजन किया गया।

किसान मेले का शुभारंभ रंगारंग कार्यक्रमों के साथ हुआ। इसमें क्षेत्र के कई गायक कलाकारों द्वारा सुनाई गई रचनाओं पर लोगों ने जमकर ठुमके लगाए। इस मेले में लगाई गई प्रदर्शनी में किसानों ने विभिन्न कृषि उपकरणों के संबंध में अधिकारियों से जानकारी ली। इस दौरान अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों ने शिरकत की।

उपनिदेशक त्रिलोक कुमार जोशी ने सभी आगंतुकों का माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया। अध्यक्षता प्रगतिशील किसान व पूर्व जिला प्रमुख शिवदयाल मीणा ने की।

इस जिला स्तरीय किसान मेले का पूर्व मंत्री रामस्वरूप मीणा, जिला प्रमुख सीताराम जांगिड़, आर.के.मीणा, राजीव गांधी विचार मंच के जिला अध्यक्ष सूरजभान मीणा, उपनिदेशक टी.के.जोशी ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। जिला प्रमुख सीताराम जांगिड़ ने बताया कि किसान अगर शिक्षित होंगे तो वे योजनाओं की जानकारी लेकर आधुनिक पद्धति से खेती कर उत्पादन बढ़ाकर अधिक मुनाफा कमा सकते है।

किसान मेले में उमड़ी भीड़ से पंडाल भी छोटा पड़ गया। मेले में दर्जनों कृषि अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने की शिरकत किसान मेले में उपस्थित किसानों को निदेशक आत्मा बीके सिंह, उपनिदेशक टी.के.जोशी, पीआरओ हरिओम गुर्जर, बीड़ी शर्मा, मोहनलाल मीणा, बाबू खां, पुखराज मीणा, लक्ष्मीचंद शर्मा, चेतराम, आरसी शर्मा ने मेले में किसानों को सरकार द्वारा जारी विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

किसानों को जिला परिषद सदस्य भूपेन्द्र सोलंकी, क्रय-विक्रय सहकारी समिति के अध्यक्ष रामखिलाड़ी बैनाड़ा, भूरा मीणा, बालघाट सरपंच जरीना बेगम, राजेंद्र सिंह चौहान, मोहनसिंह चौहान नादौती, सूरजभान मीणा, पंचायत समिति सदस्य शफीक ने भी किसानों को संबोधित किया।

मौसम के बदलाव से किसान चिंतित

रोहतक। किसानों की फसल जैसे ही पकने को तैयार हुई तो मौसम ने भी अपने रंग दिखाने शुरू कर दिए हैं। जिसकारण किसानों को अब बदलते मौसम के चलते फसलों की चिंता सताने लगी है।

वहीं, कृषि विकास अधिकारियों का कहना है कि अगर अब बारिश के साथ ओलावृष्टि हो जाती है तो किसानों की पकने को तैयार फसल में नुक्सान होगा। ऐसे में बारिश होने की आशंका जताई गई है। गौरतलब है कि इस बार बारिश ने कई वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ा है। कृषि विभाग के अनुसार जिले में 65 प्रतिशत एरिया सेम से ग्रस्त हैं।

जिस कारण इस बार बारिश के चलते करीब 15,000 हैक्टेयर भूमि में पानी जमा हो गया था। जिस कारण किसानों की रबी के मौसम की मुख्य गेहूं की फसल बर्बाद हो गई थी। एक बार जब खेतों का पानी सुख गया है और किसानों की सरसों की फसल पकने को तैयार है तो मौसम ने करवट लेनी शुरू कर दी है। सोमवार से आसमान में बादल छाने लगे हैं। जिसके कारण किसानों लग रहा है कि इस बार इंद्र देव को कुछ और ही मंजूर है।

अनाज निर्यात से पंजाब को मिली बड़ी राहत

चंडीगढ़. देश के अनाज भंडारों से 50 लाख टन अनाज निर्यात करने का केंद्र सरकार ने जो वीरवार को फैसला लिया है उससे पंजाब के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री आदेश प्रताप सिंह कैरों बड़ी राहत महसूस कर रहे हैं। दरअसल उनकी चिंता वाजिब है क्योंकि पंजाब के गोदामों (कवर्ड और ओपन) में 100 लाख टन अनाज पहले से ही पड़ा हुआ है और अप्रैल महीने में लगभग 130 लाख टन गेहूं और आना है। ऐसे में यदि यह फैसला न होता तो इतना अनाज खुले में ही सड़ता। हम पिछले तीन सालों से केंद्र सरकार पर दबाव बना रहे हैं कि वह गेहूं का निर्यात खोल दे, चूंकि अब देश में ज्यादातर राज्य खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हो रहे हैं। ऐसे में सिर्फ निर्यात ही एकमात्र उपाय है, दूसरा यह विदेशी मुद्रा लाने का एक बढिया जरिया है। देर से ही सही आखिर हमारी बात मान ली गई। 50 लाख टन का ज्यादातर हिस्सा पंजाब से ही उठाने की उम्मीद है। कैरों ने कहा, 2007 में नई फसल आने से पहले हमारे पास मात्र 7 लाख टन गेहूं था, लेकिन आज स्थिति यह है कि 100 लाख टन गेहूं ही पड़ा है।

Manufacturer & Exporter of FRP & GRP composite Products

Such as :
PP/FRP/PVC/CPVC/PVDF/STORAGE TANKS/PIPES & FITTINGS, HEAVY & LIGHT DUTY FRP/GRP CABLE TRAY (Ladder type & Perforated) GRP & FRP GRATINGS (Pultruted & Monolithic) AND VARIOUS CHEMICAL PROCESS EQUIPMENTS.
WE ARE LARGEST MANUFACTURER IN GRP STRUCTURAL PROFILES AND FRP GRATINGS IN INDIA AND OVERSEAS.
WE ENTERTAIN 90% OF LEADING INDUSTRIES OF INDIA.

SEPF AN ISO 9001 : 2008 COMPANY Reg. No. RQ 810240

SONAL GROUP

SEPF AN ISO 9001 : 2008 COMPANY Reg. No. RQ 671833

Add : "Sonal House" 67th Bhaimala, MIDC Rd, Po: Kamarle, Tal: Alibag Dist-Raigad - 402207, Maharashtra, INDIA.
Tel.: 02141-248886/248887/248888, Fax No.: 02141-248886/248887/248888, 220320
E-mail : sepf_bhai@yahoo.com, sepfpl_alibag@yahoo.com, mhatre.anil69@gmail.com, Website : www.sonalgroupindia.com
Mobile : 9822078545, 9822596045, 9922909971, 9689896545, 9922909969

ज्वार बीज उत्पादन तकनीक

ज्वार दुनिया में पाँचवें नम्बर का खाद्यान है तथा करीब तीस देशों के 50 करोड़ से ज्यादा लोग इस पर आश्रित हैं। इसका उत्पादन करीब 98 देशों में 42 मिण्हैण् में किया जाता है। अफ्रीकाए एशिया व अमेरिका के देश इसके उत्पादक हैं। ज्वार को 55प्रतिशत रोटी व दलिया के रूप में तथा पौधे को जानवरों के खाने के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। अमेरिका में 33प्रतिशत ज्वार दाने को जानवरों के खाद्यान के रूप में प्रयोग किया जाता है।

भारत वर्ष में 1970 में 9 मिण् टन ज्वार पैदा होती थी जो 1980 में बढ़कर 12 मिण् टन पहुँच गई तथा 1990 में इतनी ही पैदावार स्थिर रही जो 2006 तक स्थिर रही लेकिन इसका क्षेत्रफल काफी कम हो गया। क्षेत्रफल कम होने के बावजूद पैदावार में कमी न आने का कारण उन्नत किस्में व तकनीकी रही। भारत में ज्वार 8ण्7 मिण्हैण् क्षेत्रफल में जिसमें 3ण्9 मिण्हैण् खरीफ में तथा 4ण्8 मिण्हैण् रबी मौसम में उगाई जाती है। दुनिया में ज्वार के अन्तर्गतए कुल क्षेत्रफल का 20 प्रतिशत क्षेत्र भारत में आता है। खरीफ के मौसम में उत्पादकता 1345 किण्ग्राण् प्रति हेक्टेयर तथा रबी में 480 किण्ग्राण् प्रति हेक्टेयर होती है। अधिक उत्पादन देने वाली किस्मों का योगदान 0ण्7 मिण्हैण् से बढ़कर 6ण्5 मिण्हैण् हो गया है। इसके बावजूद 80 मिण्टन हरे चारे की तथा 660 मिण्टन सूखे चारे की कमी प्रति वर्ष रहती है।

विकसित तकनीकि एवं इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है जिससे बीज रिप्लेसमेंट को 15.20 प्रतिशत से आगे बढ़ाया जा सके। तभी उत्पादन व उत्पादकता दोनों को बढ़ाया जा सकेगा। किसान नई किस्मों का बीज स्वयं के लिये बना सके यही उद्देश्य इस लेख में दिया गया है।

बीज उत्पादन तकनीकि

बीज उत्पादन हेतु दक्षताए पुष्पज्ञान एवं लक्षण का ज्ञान आवश्यक है। निम्न बातों का ध्यान रखें तो उत्तम बीज का उत्पादन किया जा सकता है।

खेत का चुनाव: ताकि तैयारी समय से हो सके

किस्म का चुनाव: अपने क्षेत्र के अनुसार

बीज की गुणवत्ता: आधार बीज या प्रमाणित बीज

बीजोपचार: कैपटान या कैपटाफ2 ग्राण् प्रति किग्राण् बीज

बुआई का समय: जून के उत्तरार्ध या जुलाई के आरम्भ मे

बीज की दर: 12 से 15 किग्राण् प्रति हेक्टेयर

खाद: नेत्रजन 75 से 80 किग्राण् आधी मात्रा बुआई से पहले तथा आधी पहले पानी के बाद फास्फोरस 30.40 किग्राण् बुआई पर पोटाश 25.30 किग्राण् बुआई पर

सिंचाई: बुआई के बाद जमाव आने के 20.25 दिन बाद पहला पानी दें तथा दूसरा पानी आवश्यकता पड़ने पर या फूल आने पर दें।

पृथक्करण दूरी प्रजनक बीज हेतु दूसरे खेत से 400 मीण् तथा प्रमाणित बीज के लिए 200 मीण् की दूरी अवश्य रखें। लाईन से लाईन की दूरी 40.50 सेण्मीण् रखें।

खरपतवार नियन्त्रण: खरपतवार से बचाव करने हेत बुआई से पहले 0ण्5 किग्राण् प्रति हेक्टेयर एट्राजिन स्प्रे करें। इन्टर कल्चर के द्वारा भी खरपतवार को नष्ट किया जा सकता है।

मुख्य बीमारियाँ:

मधुमिता ;शूगरी डिसीज़द्धरू फूल आने की अवस्था से पहले ;ब्रूट लीफस्टेजद्ध पर 0ण्2 प्रतिशत जीरम का पाँच दिन के अन्तराल पर दो बार स्प्रे करने से इस बीमारी से बचाव हो जाता है। हनी डयूरूबाली में यदि हनी डयू दिखाई दे तो उसे बाहर निकाल कर नष्ट कर दें। पत्ती पर धब्बे ;लीफस्पाटद्धरू डाइथेन जेड.78 0ण्2 प्रतिशत का दो बार15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करने से बचाव हो जाता है।

मुख्य कीट

तना छेदक रूप्रभावित पौधे को बाहर निकाल दें तथा एण्डोसल्फान या कार्बेरिल का 4 प्रतिशत का घोल बनाकर जमाव के 20 दिन बाद 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। तना मक्खी रूबीज को 5 प्रतिशत कार्बोफ्यूरान से उपचारित कर बोने से यह मक्खी नहीं लगती है। फोरेट दानेदार 1ण्5 ग्राण् प्रति वर्गमीटर के हिसाब से डालने से भी बचाव हो जाता है। सिट्टे की मक्खी रू कार्बेरिल डस्ट 20 किग्राण् प्रति हैण् से बचाव किया जा सकता है। दीमक रूयदि खेत लम्बे समय से सूखे से प्रभावित है 25 किग्राण् सल्फर प्रति हैण् बचाव हेतु डालें। चेपा रूमेलाथियान 50 मिलीण् 50 लीण् पानी प्रति हैण् स्प्रे करने से चेपा का नियन्त्रण हो जाता है। चूहा रूफूल आने की अवस्था में जिंक फास्फाईड की गोली अवश्य डालें ताकि चूहों से बचाव किया जा सके।

रोगिंग ;अवाँछित पौधे निकालना

परागकण झड़ने से पहले किसी भी किस्म के अवाँछित पौधे निकाल देने चाहिए। गुणों के आधार पर उनकी पहचान की जा सकती है। बीमारी ग्रस्त पौधे भी अवश्य निकाल दें। किसी पौधे को शक के आधार पर बिल्कुल न छोड़ें।

कटाई एवं गहाई

फसल अच्छी तरफ पकने पर ही काटें। बीमारी ग्रस्त पौधे निकल गये हों यह सुनिश्चित कर लें। कटाई के बाद एक सप्ताह तक फसल को फर्श पर सुखायें। उसके बाद थ्रेशर से गहाई करें। स्टोर करने से पहले बीज में नमी ज्यादा न हो।

पैदावार: 18.20 कुण् प्रति है.

किस्में : पूसा चरी . 6.एक काट पूसा चरी . 9.एक से दो सम्भव पूसा चरी . 23.दो काट पूसा चरी . 615.एक काट पूसा चरी .1003.एक से दो सम्भव

बाजरा की बीज उत्पादन तकनीकि: बाजरे के उत्पादन में भारत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत में 9ण्3 मिण्हैण् क्षेत्रफल में बाजरे का उत्पादन किया जाता है। जिससे 8ण्3 मिण् टन उत्पादन होता है। 1980 के बाद क्षेत्रफल में गिरावट आई है तथा उत्पादन व उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है। हाईब्रिड बाजरे का क्षेत्रफल 3ण्0 मिण्हैण्है। बाजरा एशिया तथा अफ्रीका में खाद्य व चारा फसल है जबकि अमेरिका में केवल चारे के रूप में उगाई जाती है। बाजरे का उत्पादन बढ़ाने के लिये संकर तकनीकि मील का पत्थर साबित हो सकती है।

बाजरे की उपलब्धता टिलरींगए वृद्धिए हरा तथा सूखा चाराए रेटूनीग तथा सूखे को सहन करने की क्षमता के कारण इसको जानवरों के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। दाने के अलावा इसकी कड़वी का प्रयोग किया जाता है। इतना सब होने के बावजूद बाजरे का उत्पादन कम क्यों हैघ् इसके लिये अच्छी किस्म का बीज उपलब्ध न होनाए उन्नत तकनीकि की जानकारी न होनाए किसानों द्वारा अपना बीज न बनाना तथा बाजरे की खेती कम उपजाऊ जमीन पर करना मुख्य कारण है।

बाजरे का खेत: बाजरा का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए उन्नत तकनीकि अपनाने की आवश्यकता है जिसमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

बीज उत्पादन तकनीकि: भूमि का चुनाव रू ताकि तैयारी समय से हो सके

किस्म का चुनाव: अपने क्षेत्र के अनुसार

बीज की गुणवत्ता: आधार बीज या प्रमाणित बीज

बीज का उपचार: कैपटान या कैपटाफ 2ग्राण्प्रति किग्राण्बीज

बुआई का समय: बीज उत्पादन हेतु जुलाई मध्य सबसे उपयुक्त समय है।

संकर बीज उत्पादन तकनीकि: संकर बीज उत्पादन हेतु लाईन ए मादा जो नर स्ट्राईल होती है का क्रास लाईन ब नर जो नर फरटाईल होती है से कराया जाता है। इस तरह से हमारा लाईन ए मादा का बीज तैयार किया जाता है। संकर बीज उत्पादन में इसे लाईन ए का मेन्टीनेंस कहते हैं तथा संकर बाजरा बीज उत्पादन में मादा लाईन की तरह ही इसका उपयोग करते हैं। नर लाईन का बीज अलग से उगाया जाता है जो अलग किस्म होती है।

संकर बीज उत्पादन में नर की दो लाईन व मादा की चार लाइनें लगाते हैं तथा खेत के चारों तरफभी चार लाईने नर की लगाई जाती हैं ताकि मादा को अच्छी मात्रा में पराग कण मिलता रहे। जिससे संकर बीज उत्पादन भरपूर हो सके।

उदाहरण के तौर पर बाजरा की संकर किस्म पूसा.23 का बीज उत्पादन करने हेतु हमें पहले 841 ए का बीज उत्पादन करना होगा फिर इसे नर डी. 23 से क्रास कराना होगा तब पूसा.23 संकर बीज उत्पादन होगा।

बीमारियाँ व उनका नियन्त्रण

जंग: सितम्बर में इस बीमारी के आने की संभावना अधिक होती है जब तापक्रम उदार हो। लक्षण लाल रंग के पुस्टयूल पत्ती के दोनों सतह पर दिखाई देते हैं तथा पत्तियाँ समय से पहले सूख जाती हैं।

नियन्त्रण खरपतवार नियन्त्रण तथा रस्ट प्रतिरोधी किस्मों का चयन करना चाहिए।

इस बीमारी से 70प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है। बीज भी सक्रंमित हो जाता है।

लक्षण कवक पहले फूल को सक्रंमित करके अंडाश्य में लाल रंग का चिपचिपा पदार्थ जिसे हनी डयू कहते हैं पत्तियों पर टपक जाता है। जिससे लम्बी गाढ़े रंग की रचनायें बनती हैं। जो बाद में काली हो जाती हैं।

नियंत्रण स्क्लेरेसिया मिट्टी एवं बीज में उपस्थित होते हैं जो उपयुक्त वातावरण मिलने पर विकसित हो जाते हैं।

ऊनी मिल्डयू

पौधा नीचे से पीला पड़ जाता है। अलैंगिक रचनायें बन जाती हैं वृद्धि रूक जाती है तथा बाली न आकर पत्ती जैसी रचनायें बन जाती हैं।

सांस्कृतिक नियंत्रण

गहरी जुताई

सक्रंमित बीज को अलग करना

रासायनिक नियंत्रण

एक उपयोगी तथा किफायती कवकनाशी का उपयोग तथा कवक प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।

खरपतवार नियन्त्रण

सैन्क्रस सिलियरिंस व पैनिकम एन्टीडोटेल नामक खरपतवार पोषित करते हैं इन्हें अवश्य निकाल दें।

बाजरे के कीट एवं उनका उपचार

दीमक यदि खेत असिंचित है तो 25किग्राण्न्धकप्रति हैण् अवश्य प्रयोग करें।

एण्डि चेपा 50 मिलीण् मेलाथियान 50लीण् पानी में स्प्रे करें।

चूहा चूहा मारने की गोलियाँ जिंक फास्फाईड बाली आने पर अवश्य खेत में डालें।

रोगिंग

परागकण झड़ने से पहले अवाँछित पिछली फसल के दूसरी किस्म के तथा रोग ग्रस्त पौधे अवश्य निकाल दें। गुणों के आधार पर इन्हें दूर से पहचाना जा सकता है।

कटाई एवं गहाई

कटाई से पहले सुनिश्चित कर लें कि फसल पूरी तरह पक गई है

अवाँछित पौधे रोगग्रस्त पौधे निकाल दिये गये हैं।

ए लाईन के मेन्टेनस में प्रयुक्त ब लाईन को काटकर अलग कर लें तब ए लाईन की अलग से कटाई कर बीज निकालें।

संकर बीज उत्पादन हेतु प्रयुक्त नर लाईन को निकाल कर दूर कर दें तब मादा लाईन को बीज हेतु कटाई करें जो संकर बीज होता है।

फर्श पर सावधानी पूर्वक नर व मादा लाईनों को अलग सुखाये तब बीज निकालें।

थ्रैशर की सफाई सुनिश्चित करें।

बीज को भंडारण के समय परख लें ताकि नमी 10प्रतिशत से अधिक न हो।

संकर

पूसा . 605 एम एस 841 ए क्रास पी पी एम आई . 69

पूसा . 322 एम एस 841ए क्रास पी पी एम आई . 301

पूसा . 23 एम एस 841ए क्रास डी.23।

गेहूं की फसल में पीला रतुआ रोग से किसान परेशान

लाडवा। कस्बे में गेहूं में फैले पीला रतुआ ने किसानों की रातों की नींद उड़ा दी है। दर्जनों गांवों में पीला रतुआ का प्रकोप देखने को मिल रहा है। वैसे तो खंड कृषि विभाग के डाक्टरों ने पीला रतुआ के प्रति किसानों को जागरूक करने व पीला रतुआ को रोकने के लिए पूरी तरह से कमर कसी हुई है। कृषि विभाग की टीम किसानों को पीला रतुआ से बचने के उपाय देकर जागरूक भी कर रही है लेकिन इसके बावजूद पीला रतुआ का प्रकोप बढ़ रहा है।

गांव जंदेड़ा, छलौंदी, भूतमाजरा, मेहरा, बकाली, धनौरा जाटान सहित करीब सभी गांवों में गेहूं की फसल में पीला रतुआ के लक्षण दिखे हैं।

मार्च, 2011 में भी पीला रतुआ ने प्रभाव दिखाते हुए हरियाणा सहित कई प्रदेशों में गेहूं की फसल को भारी नुक्सान पहुंचाया था जिससे किसानों को भारी नुक्सान उठाना पड़ा था। अभी किसान बेमौसमी बरसात की मार को पूरी तरह से झेल भी नहीं पाए थे कि गेहूं में पीला रतुआ ने किसानों के होश उड़ा दिए हैं।

बेमौसमी बरसात से दर्जनों गांवों में सैंकड़ों एकड़ गेहूं की फसल खराब हो गई थी।

खंड कृषि अधिकारी डा. युद्धवीर सिंह के अनुसार लाडवा के तकरीबन सभी गांवों में पीला रतुआ के लक्षण गेहूं की फसल में नजर आ रहे हैं। उनके अनुसार अभी कोई ज्यादा प्रभाव तो नहीं लेकिन बदलते मौसम में किसानों का सचेत रहना जरूरी है।

सरकार व कृषि विभाग की तरफ से कस्बे मे गेहूं की फसल में फैले पीला रतुआ को रोकने के लिए किसानों को 50 प्रतिशत सबसिडी पर प्रोपेकोनाजोल दवाई उपलब्ध करवाई जा रही है। कृषि विभाग की तरफ से पीला रतुआ के प्रति किसानों को जागरूक भी किया जा रहा है।

खंड कृषि विभाग की तरफ से कृषि विकास अधिकारियों द्वारा गांव-गांव में जाकर गेहूं की फसल का निरीक्षण किया जा रहा है व किसानों को उपाय बताए जा रहे हैं। कृषि विकास अधिकारी डा. इंद्रपाल के अनुसार किसान जिस गेहूं के खेत में पीला रतुआ फैला हो, में 200 से 250 एम.एल. प्रोपेकोनाजोल दवाई को 250 लीटर पानी में 15 से 16 टैंकी प्रति एकड़ करने की बात भी कही।

पीला रतुआ की पहचान

पीले रतुआ की पहचान यह है कि प्रभावित पत्तों को हाथ लगाने पर अगर पीला पाऊडर हाथों पर लगे तो यह पीला रतुआ है। यह एक विषाणु जनित रोग है जोकि पीले रंग का होता है। ध्यान रहे कि प्रभावित क्षेत्र में से गुजरते हुए सारे खेत में न घूमें क्योंकि यह विषाणु कपड़ों से लगकर दूसरे भागों में भी जा सकता है।

विभाग की टीम कर रही पीला रतुआ वाले क्षेत्रों का दौरा : युद्धवीर

खंड कृषि अधिकारी डा. युद्धवीर सिंह के अनुसार तकरीबन सभी गांवों में पीला रतुआ के लक्षण दिख रहे हैं। विभाग की टीम पीला रतुआ वाले क्षेत्रों का दौरा कर रही है व किसानों को इसके प्रति सावधानियां व उपाय भी बता रही है।

अब अंडर कंट्रोल है। उनके पास ब्लाक के लिए 100 लीटर प्रोपेकोनाजोल दवाई 50 प्रतिशत सबसिडी पर उपलब्ध है और वह जिस गांव में जिस भी किसान की गेहूं में पीला रतुआ फैला है, को दवाई दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसान कृषि अधिकारियों के अनुसार ही फसल पर दवाई का छिड़काव करें। उन्होंने किसानों को सुबह-सायं अपने खेतों की निगरानी करने की बात भी कही।

राजस्थान में रिफाइनरी लगाने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर

जयपुर। राजस्थान के बाड़मेर में लगने वाले रिफाइनरी कम पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स के लिए यहां एमओयू साइन हुए। मुख्यमंत्री कार्यालय के सभागार में हुए समारोह में राज्य सरकार की ओर से पेट्रोलियम सचिव सुधांश पंत ने और एचपीसीएल की ओर से निदेशक रिफाइनरी ने साइन किए। इस समारोह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री डॉ. एम.वीरप्पा मोइली, पेट्रोलियम राज्य मंत्री पी. लक्ष्मी, राज्य के पेट्रोलियम मंत्री राजेंद्र पारीक, मुख्य सचिव सी.के. मैथ्यू, पेट्रोलियम मंत्रालय के विशेष सचिव सुधीर भार्गव और एचपीसीएल के सीएमडी एस. रॉय चौधरी मौजूद थे। इनके साथ ही कई केंद्रीय मंत्री, सांसद, मंत्री और विधायक भी मौजूद थे।

तीन से चार माह की अवधि में रिफाइनरी के लिए वित्तीय ओर तकनीकी जरूरतों को पूरा करने का काम कर लिया जाएगा। इसके बाद यूपीए की चेयरपर्सन सोनिया गांधी के हाथों रिफाइनरी का शिलान्यास कराया जाएगा। इस रिफाइनरी कम पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स में राज्य सरकार की ओर से 15 से 26 प्रतिशत के बीच हिस्सेदारी रखी जाएगी। हिस्सा राशि के रूप में राज्य सरकार की ओर से 800 करोड़ रुपए हर साल अगले चार साल तक दिए जाएंगे। पांचवे साल से 15 साल तक 3736 करोड़ रुपए पैकेज दिया जाएगा।

राजस्थान की क्रूड सबसे बेहतर और पर्याप्त = केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री डॉ. एम. वीरप्पा मोइली ने कहा कि राजस्थान में मिला क्रूड ऑयल सबसे बेहतर हैं। यहां स्थापित होने वाले रिफाइनरी कम पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स को इसी के आधार पर डिजाइन किया गया है।

उन्होंने कहा कि बाड़मेर-सांचौर बेसिन के मंगला और अन्य ऑयल फील्ड में इतना पर्याप्त क्रूड ऑयल के भंडार उपलब्ध है कि इसके लिए बाहर से क्रूड ऑयल आयात करने की जरूरत ही नहीं होगी। उन्होंने कहा कि अभी केयर्न की ओर से 1 लाख 75 हजार बीपीडी क्रूड ऑयल का उत्पादन किया जा रहा है, इसे 3 लाख 50 हजार बीपीडी तक करने की अनुमति देने जा रहे हैं। उन्होंने घोषणा की कि एचपीसीएल के खर्चे पर स्थानीय युवाओं के तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाएगा, जो कॉम्प्लेक्स लगने के बाद भी जारी रहेगा और रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा। यहां सीधे तौर पर 25 हजार और अप्रत्यक्ष रूप से एक लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिल सकेगा।

किसानों को पर्याप्त मुआवजा देंगे = मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि रिफाइनरी कम पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लैक्स के लिए अवाप्त की जाने वाली जमीन के लिए पर्याप्त मुआवजा देंगे। इसके साथ ही जिन किसानों की जमीन ली जाएगी, उनके परिवार के युवाओं को इस प्रोजेक्ट में नौकरी भी दिलाई जाएगी। उन्होंने वीरप्पा मोइली यह कहते हुए धन्यवाद जताया कि उन्होंने 32 साल पुरानी दोस्ती को निभाया और प्रदेश को रिफाइनरी का तोहफा दिया। उन्होंने सांसद हरीश चौधरी, केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय में विशेष सचिव सुधीर भार्गव, राज्य के प्रमुख वित्त सचिव डॉ. गोविंद शर्मा, सुधांश पंत के प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम में एचपीसीएल को सीएमडी एस.रॉय चौधरी ने कंपनी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और भरोसा दिलाया कि क्षेत्र के विकास में कंपनी अपनी भागीदारी निभाएगी। पेट्रोलियम मंत्रालय के विशेष सचिव सुधीर भार्गव ने कहा कि इक कॉम्प्लेक्स के बनने से प्रोली प्रोपीलीन, प्रोली एथलीन व अन्य उत्पादों से कई इंडस्ट्रीज लग सकेंगी। उन्होंने कहा कि इस राजस्थान को हर साल 35,000 करोड़ रुपए तक की आय हो सकेगी। प्रारंभ में पेट्रोलियम मंत्री राजेंद्र पारीक ने स्वागत किया। अंत में पेट्रोलियम सचिव सुधांश पंत ने सभी का आभार जताया।

अगले सीजन में भी चीनी का उत्पादन घटने के आसार

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार ने कहा है कि अगले अक्टूबर से शुरू होने वाले नए मार्केटिंग सीजन 2013-14 के दौरान भी चीनी का उत्पादन कम रहने का अनुमान है। महाराष्ट्र में गन्ने की कम पैदावार के कारण देश में लगातार दूसरे वर्ष चीनी का उत्पादन घटकर 240 लाख टन रहने का अनुमान है।

पवार ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2011-12 (सितंबर-अक्टूबर) में देश में 260 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। इस साल चीनी का उत्पादन 245-250 लाख टन रहने का अनुमान है। जबकि अगले साल यह 240 लाख टन तक रह सकता है।

पवार ने आगे बताया कि महाराष्ट्र देश का सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक राज्य है। लेकिन यहां लगातार दूसरे वर्ष कम वर्षा होने के कारण गन्ना रोपण अभी शुरू नहीं हुआ है। हालात इतने गंभीर हैं कि राज्य सरकार ने पीने के लिए पानी बचाने का फैसला किया है। फसलों के लिए पानी उपलब्ध नहीं है। पवार ने बताया कि मौजूदा विपणन सीजन 2012-13 (सितंबर-अक्टूबर) में महाराष्ट्र और कर्नाटक को छोड़कर अन्य राज्यों में चीनी का उत्पादन अच्छा हुआ है। महाराष्ट्र में चीनी का उत्पादन उम्मीद से कम हुआ है। गन्ने की फसल का बड़ा हिस्सा चारे के रूप में इस्तेमाल होने के कारण गन्ने की पैदावार कम रही। जबकि उत्तर प्रदेश में उत्पादन की स्थिति अच्छी है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- सुरेश शर्मा की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगाव, पूर्व, मुम्बई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड, पश्चिम, मम्बई-400064 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक-सुरेश शर्मा। CONTACT DETAIL: TEL: 022-66998360/61, FAX: 022-66450908, Cell- 09829220788, Email: info@srushtiagro.com, Website: www.srushtiagronews.com